## नूरजहाँ का प्रभुत्व

जहांगीर का नूरजहां के साथ विवाह उसके पारिवारिक जीवन की ही एक महत्वपूर्ण घटना नहीं थी, अपितु वह मुगल साम्राज्य की विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण घटना थी। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही जहांगीर पर नूरजहां का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। जहांगीर आरम्भ से ही विलासी प्रकृति का था और दिन प्रतिदिन विलासिता में फंसता जा रहा था। उसने राज्य की सम्पूर्ण बागडोर महत्वाकांक्षी नूरजहां के हाथों में दे दी। अब राज्य की वास्तविक शासक नूरजहां थी। सम्राट जहांगीर की मृत्यु तक वह मुगल साम्राज्य की भाग्य विधात्री बनी रही और जहांगीर नाममात्र का शासक रहा। मध्ययुगीन भारतीय इतिहास में जितना प्रभुत्व एवं महत्व इस असाधारण व्यक्तित्व वाली सम्राज्ञी का रहा, उतना अन्य किसी रमणी का नहीं रहा।

**डॉ० बेनी प्रसाद** ने नूरजहां के प्रभुत्व-काल को दो भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग सन् १६११ से १६२२ ई० तक और द्वितीय सन् १६२२ से १६२७ ई० तक। विवाह के बाद ग्यारह वर्ष की अवधि तक नूरजहां का राजनीति, प्रशासन एवं जहांगीर के व्यक्तित्व पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसका विवेचन निम्नलिखित है—

**(१) जहाँगीर के व्यक्तित्व पर नूरजहाँ का प्रभाव**— जहांगीर ने ४३ वर्ष की आयु में ३४ वर्षीय नूरजहां से विवाह किया। वह नूरजहां के प्रति अत्यधिक आकर्षक था और उससे अगाध प्रेम करता था। नूरजहां भी उससे बहुत प्रेम करती थी। उसके प्रेम और गुणों का प्रभाव जहांगीर पर पड़ा। नूरजहां के प्रभाव सेजहांगीर में मानवोचित गुणों की अभिवृद्धि हुई। नूरजहां के विवाह के बाद जहांगीर ने भयंकर क्रूरता, निर्ममता एवं हिंसा के कार्य करना बहुत कम कर दिये। नूरजहां स्वयं उसकी खूब देखभाल करती थी। वह मद्यपान की मात्रा को कम करने के लिए जहांगीर से विशेष आग्रह करती थी। उसके इस आग्रह के फलस्वरूप ही उसने मद्यपान कम कर दिया था। जहांगीर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है कि नूरजहां से विवाह करने के पूर्व वह प्रतिदिन २० प्याले शराब के पीता था किन्तु बाद में केवल पांच प्याले ही पीकर सन्तोष कर लेता था। कहा जाता है यदि नूरजहां उसका मद्यपान कम नहीं करती तो बहुत सम्भव था कि जहांगीर भी अपने दो भाइयों दानियाल तथा मुराद की भांति शीघ्र ही जीवन से हाथ धो बैठता। नूरजहाँ के द्वारा जहांगीर का मद्यपान कम करा देने पर भी वह रात्रि में बहुधा तब तक शराब पीता था जब तक कि वह बेहोश न हो जाय। किन्तु वह दिन में शराब नहीं पीता था। उसके दरबार में किसी भी अमीर को शराब पीकर आने की अनुमति

Scanned with CamScanner

नहीं थीं। नूरजहां ने सदैव उसकी इच्छाओं एवं भावनाओं का सम्मान किया और अपने यथेष्ट प्रयासों से जहांगीर को चिंता मुक्त रखा।

(२) **राजनीति एवं प्रशासक की ओर जहांगीर की उदासीनता तथा नूरजहां का बढ़ता हुआ प्रभाव**—नूरजहाँ अत्यन्त लावण्यमयी, आकर्षक, गुण सम्पन्न तथा प्रभावोत्पादक व्यक्तित्ववाली स्त्री थी। वह बहुत ही बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी, साहसी एवं स्वाभिमानी थी। वह प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभुत्व रखना चाहती थी। उसने जहांगीर की राजकीय तथा प्रशासकीय कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे अपनी विलासी प्रवृत्ति के कारण जहांगीर ने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र से पीछे हटना प्रारम्भ कर दिया। उसने शासन सूत्र नूरजहां को सौंप दिये और स्वयं राजकार्य से उदासीन रहने लगा। राज्य की ओर से जहांगीर की बढ़ती हुई उदासीनता के कारण नूरजहाँ के प्रभुत्व और हस्तक्षेप में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। धीरे-धीरे सम्पूर्ण राजकीय शक्ति नूरजहां ने अपने हाथों में ले ली। राज्य के आदेश प्रायः उसी के नाम से निकलते थे। राज्य के बड़े से बड़े अमीर उसके कृपा पात्र बने रहने का सदैव प्रयत्न करते थे। वे उसकी अनुकम्पा प्राप्त करने के लिये लालायित रहते थे और समय-समय पर उसकी सेवा में उपस्थित होते रहते थे। नूरजहां के मुख से निकलने वाला आदेश उनके जीवन को उन्नत या अवनत कर सकता था। वह जहांगीर के साथ राजमहल के बुर्ज के झरोखे में बैठकर प्रजा को दर्शन देने लगी थी। मुगलो सिक्कों पर भी उसका नाम अंकित होने लगा था। नूरजहां ने शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से बनाये रखने के लिये राज्य में होने वाले अनावश्यक व्यय को कम कर दिया। इस मितव्ययता के कारण अनेक विद्वानों ने उसकी प्रशंसा की है। फिजूलखर्ची समाप्त करने पर भी उसने शासन व्यवस्था में कोई अभाव नहीं आने दिया।

(३) **नूरजहां द्वारा सम्बन्धियों की उच्च पदों पर नियुक्ति**—नूरजहां ने पक्षपात और गुटबन्दी की नीति अपनायी। उसने अपने परिवार के सदस्यों एवं सगे सम्बन्धियों को राज्य में ऊंचे पदों पर नियुक्त किया। उसने अपने पिता मिर्जा गयासबेग को मुख्यमंत्री के उच्च पदों पर नियुक्त किया और उसे "इतमादौला" की उपाधि प्रदान की तथा उसके मनसब में भी वृद्धि कर दी। गयासबेग पहले दो हजार जात और पाँच हजार सवार का मनसबदार था। किन्तु सन् १६२२ ई० में वह सात हजार जात और सात हजार सवार का मनसबदार बना दिया गया था। इसी प्रकार नूरजहाँ ने अपने भाई आसफखां के मनसब में भी वृद्धि कर दी थी और उसे दीवान के पद पर भी नियुक्त कर दिया था। आसफखां की पुत्री अर्जुमन्द बानू बेगम का विवाह खुर्रम से कर दिया गया। इससे आसफखां की शक्ति और प्रतिष्ठा में खूब वृद्धि हुई।

(४) **नूरजहाँ की गुटबन्दी एवं उसका प्रभाव**—राजनीति और प्रशासन में नूरजहाँ ने अपना एक अलग गुट बना लिया था। इस गुट में स्वयं नूरजहां, उसका

Scanned with CamScanner

पिता गयासबेग, भाई आसफखां, दामाद खुर्रम तथा उसकी माता असमत बेगम थी। यह गुट बड़ा प्रभावणाली था। नूरजहां अपने पिता गयासबेग के परमर्श से कार्य करती थी। मुगल दरबार में दीर्घकाल तक रहने के कारण, वह सभी अमीरों और सरदारो से तथा राजनीति एवं प्रशासन के सभी विभागों से पूर्णरूपेण परिचित था। इस कारण इस गुट में गयासबेग का स्थान महत्वपूर्ण था। नूरजहाँ की माता अस्मत बेगम भी गुणवान एवं बुद्धिमती स्त्री थी। उसने राजमहल में नूरजहां की शक्ति एवं प्रभुत्व को स्थापित करने में काफी योगदान दिया। नूरजहां के माता-पिता अपनी पुत्री की सदैव सहायता एवं पथ निर्देशन करते रहे। उन्होने नूरजहाँ की महत्वाकक्षांआओं को अनुचित मार्ग की ओर अग्रसर नहीं होने दिया। नूरजहां का भाई आसफखां राजनीतिक एवं प्रशासनिक कार्यों में बहुत निपुण था। वह अर्थ-व्यवस्था में अद्वितीय था और कूटनीति में भी खूब दक्ष था। वह अच्छा विद्वान् भी था। इन सब गुणों के कारण वह भी नूरजहां के गुट में प्रभावशाली स्थान रखता था। खुर्रम अपने समस्त भाईयों में सुयोग्य होने के कारण जहांगीर का उत्तराधिकारी माना जाने लगा था। गुट का सदस्य होने के कारण साम्राज्य के समस्त सैनिक अभियानों और आक्रमणों का नेतृत्व खुर्रम को दिया जाता था। कांगड़ा तथा अहमदाबाद की विजय के लिए खुर्रम को ऐये समय वहाँ भेजा गया, जब विजय कीर्ति खुर्रम को ही उपलब्ध हो सके। मेवाड़, कांगड़ा तथा अहमदनगर की विजय से खुर्रम का यश समस्त मुगल साम्राज्य में फैल चुका था। इस सफलता के फलस्वरूप उसके मनसब में वृद्धि कर दी गई। उसे तीस हजार जात और बीस हजार सवार का मनसबदार बना दिया गया। इसके अतिरिक्त उसे हिसार की जागीर भी प्रदान की गई और उसे जहांगीर ने "शाहजहाँ" की उपाधि से विभूषित दिया।

इस प्रकार राजसत्ता नूरजहां, गयासबेग, अस्मत बेगम, आसफखां तथा खुर्रम के हाथों में केन्द्रीभूत थी। इस गुट के सदस्यों के हाथों में ही शासकीय पदों पर नियुक्तियां, पदाधिकारियों के स्थानान्तरण आदि कार्य निहित थे। समकालीन अंग्रेज यात्री **सर टामसरो** ने इस गुट के विषय में लिखा है कि इसकी सहायता के बिना कोई भी कार्य करना असम्भव था। इसका प्रभाव इतना अधिक शक्तिशाली हो गया था कि महावतखां जैसे प्रबल अमीर भी उससे भय खाते थे।

**(५) वेशभूषा, शृंगार एवं साजसज्जा में नूरजहाँ का प्रभाव**— नूरजहाँ का प्रभाव तत्कालीन वेशभूषा, शृंगार, आभूषण एवं साजसज्जा पर भी पड़ा। नूरजहाँ सुन्दर सुसंस्कृत थी और उसकी अभिरुचि बड़ी परिष्कृत थी। उसने वेशभूषा तथा अलंकरण में परिवर्तन एवं संसोधन दिये। वह अपनी वेशभूषा, शृंगार तथा आभूषणों का बड़ा ध्यान रखती थी। वह स्वयं एक कलाकार और परिष्कृत रूचि की लावण्यमयी स्त्री थी इसलिए उसने नये-नये वस्त्रों एवं आभूषणों के नमूनों का आविष्कार किया। उसने नये-नये फैसन प्रचलित किये तथा जरी, किनारी, लंहगों, दुपट्टों,

Scanned with CamScanner

कालीनों आदि में नये आकर्षक नमूने प्रसारित किये। उसके द्वारा प्रचलित दुदामी, पंचतोलिया और फर्श चांदनी आज तक प्रसिद्ध हैं। उसने सोने-चाँदी और रत्नजड़ित आभूषणों में भी नये-नये नमूने प्रचलित किये। उसने कमरों आदि को भी सजाने में भी नवीन ढंग अपनाया तथा शाही दावतों और प्रीतिभोजों को आयोजित करने के ढंगों में भी आकर्षक सुधार एवं परिवर्तन किये। सुगंधित पदार्थों से उसे विशेष रुचि थी। गुलाब के इत्र की आविष्कर्त्री नूरजहां ही मानी जाती है।

(३) अनाथों तथा दीन दुखियों की सहायता—नूरजहाँ का नारी हृदय असीम ममता, कोमलता, दयालुता, मधुरता एवं सहानुभूति से भरा हुआ था। दीन दुखियों के कष्टों को देखकर उसका हृदय द्रवीभूत हो जाता था। इसलिए वह राज्य की ओर से निस्सहाय लोगों की सहायता करती थी। उसने अनेक अनाथ कन्याओं को आश्रय दिया। वह अनाथ मुस्लिम कन्याओं के विवाह में बड़ी उदारता से आर्थिक सहायता देती थी। नूरजहाँ ने अपने प्रभुत्व के सोलह वर्षों में लगभग पाँच सौ कन्याओं के विवाह कराये। इसके अतिरिक्त वह अक्सर दान भी दिया करती थी। किन्तु नूरजहाँ की यह दयालुता, सहानुभूति, आर्थिक सहायता आदि केवल मुस्लिम समाज तक ही सीमित थी।

**नूरजहाँ के प्रभुत्व का द्वितीय युग (सन् १६२२–२७ ई०)**—नूरजहाँ की सत्ता के प्रथम युग के समान द्वितीय युग गौरवपूर्ण तथा हितकारी नहीं हो सका। इस युग मे अशान्ति, अव्यवस्था एवं अराजकता का बोलबाला था। इसी काल में शाहजहाँ (खुर्रम) और महाबतखां के विद्रोह हुए। यह युग विद्रोहों, उपद्रवों, एवं षड्यंत्रों का युग बन गया। इस काल में नूरजहाँ के गुट में भी फूट पड़ गई थी। इस काल की निम्नलिखित विशेषतायें हैं—

**(१) जहांगीर की रूग्णावस्था एवं राजनीति में उसकी पूर्ण उदासीनता**—इस समय तक जहांगीर राजनीति एवं प्रशासनिक कार्यों के प्रति पूर्णरूपेण उदासीन हो चुका था। मादक द्रव्यों का अत्यधिक सेवन करने के कारण जहाँगीर का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता गया और १६२० ई० में तो वह इतना अधिक बीमार हो गया कि उसके बचने की कोई आशा नहीं रही थी। निरन्तर उपचारों और नूरजहाँ की सेवा के फलस्वरूप उसके प्राण तो बच गये किन्तु अस्वस्थ्य होने के कारण राजकार्यों को संभालने में वह सर्वथा अशक्त हो गया। अब उसने राजसत्ता पूर्णरूप से नूरजहां के हाथों में सौंप दी। इस प्रकार सन् १६२२ ई० के बाद जहाँगीर नाममात्र का सम्राट रह गया और नूरजहाँ प्रत्येक क्षेत्र में प्रधान हो गई थी।

**(२) ग्यासबेग तथा अस्मत बेगम की मृत्यु और उसका प्रभाव**—सन् १६२१ ई० में नूरजहाँ की माता अस्मत बेगम और सन् १६२२ ई० में उसके पिता ग्यासबेग की मृत्यु हो गई थी। नूरजहाँ को इन दोनों का संरक्षण प्राप्त था। यह नूरजहाँ की महत्वाकांक्षाओं तथा स्वेच्छाचारिता को नियंत्रित करते रहे और समय-समय पर

Scanned with CamScanner

उसे योग्य परामर्श देते रहे। किन्तु उनकी मृत्यु के बाद नूरजहाँ की महत्वाकांक्षाएँ अनियन्त्रित हो गयी और उसकी स्वेच्छाचारिता अधिक बलवती होती गयी।

(३) **खुर्रम से शत्रुता और शहरयार को संरक्षण**—सन् १६२२ ई० तक नूरजहां और खुर्रम में परस्पर खूब मेल-जोल रहा। किन्तु बाद में वह खुर्रम की कट्टर विरोधी बन गई। सन् १६२० ई० में नूरजहाँ ने शेर अफगन से उत्पन्न अपनी पुत्री लाड़ली बेगम का विवाह जहाँगीर के दूसरे पुत्र शहरयार से कर दिया। अब नूरजहां का झुकाव एवं सहानुभूति खुर्रम की अपेक्षा शहरयार की ओर अधिक हो गया। वह खुर्रम को युवराज पद से हटा कर शहरयार को राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। नूरजहां बड़ी दूरदर्शी राजनीनिज्ञ थी। वह शहरयार को जहांगीर का उत्तराधिकारी बनाकर जहांगीर के बाद भी राज्य पर अपना पूर्ण अधिकार रखना चाहती थी। जहांगीर तथा उनके सभी अमीर और सरदार खुर्रम की योग्यता एवं गुणों के कारण राज्य का उत्तराधिकारी खुर्रम को मानते थे। खुर्रम के इस बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर नूरजहाँ खुर्रम से ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य रखने लगी थी। वह शहरयार के मार्ग से खुर्रम को सदा के लिए हटाना चाहती थी। इसके लिए उसने खुर्रम के विरुद्ध जहांगीर के कान भरने आरम्भ कर दिये और दूसरी ओर अपने दामाद शहरयार को युद्धों और अभियानों में सेनापति बनाकर भेजने लगी। इससे खुर्रम और नूरजहां का भाई आसफखाँ दोनों ही नूरजहां से नाराज हो गये। आसफखाँ अपने दामाद खुर्रम को जहाँगीर का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। इससे नूरजहां का गुट भंग हो गया और खुर्रम ने खुल्लम-खुल्ला जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

(४) **नूरजहां के पक्षपात एवं गुटबन्दी का कुप्रभाव**—नूरजहां ने अपने सम्बन्धियों, परिवार के सदस्यों एवं समर्थकों को उच्च पद प्रदान किये। अपने पिता तथा भाई को महत्वपूर्ण पदों पर आसीन किया। नूरजहाँ के सम्बन्धियों और कृपा-पात्रों से मुगल दरबार और प्रशासन आच्छादित हो गया। पदों को प्रदान करते समय योग्यता की अपेक्षा शुद्ध रक्त का अधिक ध्यान रखा गया। इस प्रकार मुगल दरबार में उसके पिता के वंश का एक सुसंगठित एवं विस्तृत दल बन गया। समय के साथ इस दल की शक्ति बढ़ती गई। सरकारी नौकरियों और उच्च पदों की प्राप्ति के लिए इस दल की कृपा दृष्टि आवश्यक हो गई। नूरजहां इस दल के प्रभाव में इतनी अधिक आ गई थी कि इसके इशारे पर उसने अनेक योग्य और प्रतिभाशाली सेवकों और अमीरों की राजदरबार से छुट्टी कर दी। उसने महाबतखाँ सरीखे शक्तिशाली अमीर का भी अपमान किया। महाबतखाँ को उसके शौर्य और साहस के कारण अमीर-उल-उमरा की गौरवमय प्रतिष्ठा प्राप्त थी। नूरजहाँ की मदान्धता और गुटबाजी ने अनेक अमीरों और उच्च अधिकारियों को असन्तुष्ट कर दिया था। परिणामस्वरूप मुगल दरबार गुटबाजी का अखाड़ा बन गया। महाबतखां के नेतृत्व

Scanned with CamScanner

में अनेक व्यक्तियों ने नूरजहां और उसके पिता के गुट का विरोध करना शुरू कर दिया। महाबतखां ने बन्दी राजकुमार खुसरो का पक्ष लिया। जहांगीर के पुत्रों में खुसरो न केवल बड़ा था वरन् सबसे योग्य भी था। महावतखां ने जहांगीर को सलाह दी कि वह राजकुमार खुसरो को जेल से रिहा कर दें। नूरजहां के सौन्दर्य और प्रभाव में कैद जहांगीर ने महाबतखाँ के परामर्श को ठुकरा दिया। साथ ही खुसरो को बुरहानपुर भिजवा दिया गया, जहाँ खुर्रम ने गला घोंट कर उसकी हत्या करवा दी। नूरजहां के पक्षपात और गुटबन्दी ने महाबतखाँ को विद्रोह करने के लिए विवश कर दिया। महाबतखाँ ने जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और झेलम के समीप जहाँगीर को बन्दी बना लिया। यद्यपि नूरजहां ने अपनी कूटनीति से जहांगीर को निरन्तर षड़यंत्रों, संकटों एवं गृह-युद्ध के थपेड़ों को सहन न कर सका और शीघ्र ही इस संसार से चल बसा।

इस प्रकार राजनीतिक क्षेत्र में नूरजहाँ का प्रभाव हानिकारक सिद्ध हुआ। उसकी महत्वाकांक्षाओं, लोलुपता, प्रतिशोध की भावना, सगे सम्बन्धियों के साथ पक्षपात की भावना एवं दरबार में षड़यंत्र रचने की प्रवृति ने तात्कालिक राजनीति को इतिहास का एक अपकर्षोन्मुख अध्याय बना दिया। इस दरबारी संघर्ष के कारण कान्धार हमेशा के लिए हाथ से निकल गया।

Scanned with CamScanner